कलीसिया अध्याय 9

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज सुनने के लिए **प्रार्थना** करे।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* 1 कुरिन्थियों 13-16

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (1 कुरिन्थियों 9-12) में शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। नोट्स बनाएं।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में कुँजी वचन]* (3) यूहन्ना 2:25

दो दो करके पुनरावलोकन करें।

(3) विश्वास : रोमियों 4:20-21। और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर सन्देह किया, पर विश्वास मे दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की। और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है वह उसे पूरी करने को भी सामर्थ्यी है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[कलीसिया के पर्व]* पिन्तेकुस्त: पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने का स्मरणोत्सव

परिचय। पिन्तेकुस्त एक मसीही पर्व है जिसे पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के स्मरणोत्सव के रूप में मनाया जाता है। हम इस अध्याय में सीखेगें कि बाइबल पवित्र के उण्डेले जाने और मसीहियों पर उसके प्रभाव के बारे में क्या कहती है। हम जानेगें कि पुराने नियम में पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बारे में क्या कहा गया है और,जब पवित्र आत्मा उण्डेला गया तो क्या हुआ, और आपके लिए पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना क्यों महत्वपूर्ण है।

क. पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने से सम्बन्धि भविष्यद्वाणियां

1. पुराने नियम में फसल काटने का पर्व पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने की रीति पर दिया गया दृष्टान्त है।

पुराने नियम में, पिन्तेकुस्त एक कटनी का पर्व था,अर्थात आधिकारिक तौर पर उपज के अन्त का समय(निर्गमन 23:16)। यह फसह के सबत के उत्सव सात सप्ताह बाद पड़ने वाले रविवार के दिन मनाया जाता है(पहले महिने निसाल या मार्च-अप्रैल के 15वें दिन में) जब अनाज की उपज का पहले पूला महायाजक को दिया जाता है और वह उसे परमेश्वर के सामने हिलाता है(लैव्य 23:10-11)। इस तरह से फसह के बाद पचासवां दिन पिन्तेकुस्त कहलाता है। जो नई फसल की घोषणा करता है और बाद में यीशु मसीह के पुनरूत्थान को प्रगट करता है!

पिन्तेकुस्त को "साप्ताहिक पर्व" कहा जाता है, जो कि पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के दृष्टान्त को दर्शाता है(लैव्य 23: व्यवस्थाविवरण 16)। इस्राएलियों को जिस हिसाब से परमेश्वर ने आशीषित किया होता था उसी हिसाब से अपनी उपज के एक हिस्से को मन्दिर मे लाना होता था । वहां पर वे अपने परिवारों,दासों,लेवियों, जुड़े लोगों और शहर के गरीबों के साथ उत्सव मनाया करते थे। अत: पिन्तेकुस्त का पर्व परमेश्वर को अपनी उपज के लिए धन्यवाद देने का पर्व है।

नये नियम में इस कटनी के पर्व के दौरान (प्रेरितो 2)पवित्र आत्मा उण्डेला गया था। प्रेरितों ने सुसमाचार प्रचार किया,तीन हज़ार लोगों ने यीशु मसीह को ग्रहण किया और इस तरह से यरूशलेम में प्रथम मण्डली को निर्माण हुआ। *अत: पुराने नियम में कृषि की उपज का पर्व नये नियम में आत्मिक उपज का पर्व बन गया।* नये नियम में उपज के पर्व का परिणाम संसार भर में हर स्थान पर नये मसीही और नयी कलीसियाएं हुए।

2.पुराने नियम में पवित्र आत्मा से सम्बन्धित भविष्यद्वाणियां।

खोजें और चर्चा करें। निम्नलिखित भविष्यद्वाणियों में पवित्र आत्मा के बारे में क्या भविष्यद्वाणी की गयी है?

(1) यशायाह 32:15; यशायाह 44:3

परमेश्वर ने कहा कि वह अपने लोगों पर पवित्र आत्मा उण्डेलेगा। जिस प्रकार से बंजर और सूखी भूमी पर स्वर्ग से वर्षा से निर्जल भूमि उपजाऊ भूमि तथा जगंल में तबदील हो जाती है, उसी प्रकार से स्वर्ग(जहां परमेश्वर वास करता है) से उण्डेले गयी पवित्र आत्मा का परिणाम बहुत सी आशीषे होगीं।

(2) यहेजकेल 36:25-28।

परमेश्वर ने कहा कि वह अपने लोगों पर शुद्ध जल छिड़ककर उन्हें उनकी अशुद्धता और मूर्तिपूजा से शुद्ध करेगा। वह उनमें से पत्थर का हृदय निकाल कर उनमें अपनी आत्मा डालेगा और इस तरीके से वे परमेश्वर के वचन का अनुसरण करेगें और उसे मानेगें।

(3) योएल 2:28-32

परमेश्वर ने कहा कि वह सभी प्राणियों पर अपनी पवित्र आत्मा उण्डेलेगा। वे भविष्यद्वाणी करेगें, स्वप्न और दर्शन देखेगें। जो कोई परमेश्वर का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।

(4) जर्कयाह 4:6

परमेश्वर ने कहा कि वह अपना कार्य मानवीय शक्ति व उपद्रव के द्वारा नहीं(आतंकवाद, लड़ाई के द्वारा) परन्तु अपनी आत्मा के द्वारा पूरा करेगा। अत: पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने का परिणाम:

- परमेश्वर को पुकारने वाले लोगों को उद्धार होगा।
- परिशुद्ध और परिवर्तित हृदय होगें।
- परमेश्वर के वचन का आज्ञापालन होगा।
- दर्शन और स्वपन होगा जिसका परिणाम उद्देश्यपूर्ण और फलदायक जीवन होगा!

3. नये नियम में पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बारे में की गयी भविष्यद्वाणियां

खोजे और चर्चा करें। पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बारे में यीशु मसीह ने क्या भविष्यद्वाणी की?

1. यूहन्ना 7:37-39।

यीशु मसीह ने कई बार अपने लोगों (विश्वासियों) पर पवित्र आत्मा उण्डेले जाने के बारे में भविष्यद्वाणियां कीं। विश्वासियों को (उसकी मृत्यु व पुनरूत्थान के समय से पहले)यीशु के महिमा में उठा लिये जाने तक पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के लिए इन्तज़ार करना था(अर्थात उसके पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और सिहांसन पर विराजमान होने तक)। उसके बाद ही पवित्र आत्मा "जीवन के जल की नदियों के समान) बह सकता था।

(2) प्रेरितों 1:5

यीशु ने कहा कि उसके चेले उसके स्वर्गारोहण के पश्चात पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाएंगे। यह पिन्तेकुस्त के दिन हुआ जिसका वर्णन प्रेरितों 2 में किया गया है। प्रेरितों 11:14-18 और प्रेरितों 15:6-11 हमें सिखाता है कि "पवित्र आत्मा का बपतिस्मा"(पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना) व "पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म पाना" एक समान है।

ख. पवित्र आत्मा उण्डेले जाने को इर्द गिर्द हुई घटनाएं

1. पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना।

पढ़ें प्रेरितों 2:1-47

खोजें व चर्चा करें। पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा किस प्रकार उण्डेला गया?

(1) पुराने नियम के समय में लोगों पर पवित्र आत्मा को उण्डेला जाना।

यद्यपि पवित्र आत्मा पुराने नियम के समय में पहले ही लोगो पर उतरता था, लेकिन पवित्र आत्मा का उण्डेला जाने व उसके स्थायी रूप में वास करने की प्रतिज्ञा विशेष तौर पर नये नियम में ही दी गयी (गिनती 11:17,25,29,; 1शमुएल 10:6; 116:13-14; 19:20-21; 2 शमूएल 23:2 ; यूहन्ना 20:21-23)।

(2) पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा को उण्डेला जाना।

यीशु मसीह के स्वर्गारोहण के दस दिनों के बाद, उसने सभी प्राणियों पर अपनी आत्मा को उण्डेल दिया, अर्थात उस समय में यीशु पर विश्वास करने वाले लोगों सभी विश्वासियों पर। वह दिन उपज के एकत्र करने का पर्व था। इसलिए रोमी साम्राज्य वर और भी जगहों जैसे दियापोरा से भी यहूदी लोग यरूशलेम में उत्सर्व मनाने के लिए आये। यरूशलेम के सभी यहूदियों के लिए तीन पर्वो का मनाना अनिवार्य था जिसमें से एक पिन्तेकुस्त का पर्व(व्यवस्साविवरण 16:16)

(3) पिन्तेकुस्त के दिन का अनोखा चिन्ह

- "बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का सा शब्द" पवित्र आत्मा की अदृश्य सामर्थी शक्ति को प्रगट करता है, जो लोगों को सर्वश्रेष्ठ तरीके से नया जन्म प्रदान करता (यूहन्ना 3:3-8) और जहां चाहे वहां काम करता है। (प्रेरितों 16:6-10)।
- "आग की सी फटती हुई जीभें जो लोगों पर आकर ठहर गयी थीं" संसार भर की अनेकों भाषाओं में ज्वलनशील जुनूनू, प्रेम और साहस व निरूत्तरता के साथ सुसमाचार प्रचार करने के वरदान दिये जाने को दर्शाता है। (प्रेरितों 2:3)।
- सुननेवालों ने मसीहियों को "आस पास के देशों की विभिन्न भाषाओं में" परमेश्वर के अदभुत कामों का गुणानुवाद करते हुए देखा(प्रेरितों 2:11)।
- मसीहियों ने यरूशलेम में "प्रथम स्थानीय कलीसिया की स्थापना की" और वे प्रेरितों के साथ "शिक्षा पाने, संगति करने, रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में लौलीन रहे"(प्रेरितों 4:42)।

(4) प्रथम यहूदियों पर पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना, जो पहले से ही विश्वासी थे(मसीही)।

पिन्तेकुस्त के दिन, यीशु मसीह के 120 चेलों पर पवित्र आत्मा उण्डेला गया। हालांकि वे पहले से ही विश्वासी थे, लेकिन उन्हें अभी तक पवित्र आत्मा का बपतिस्मा इसलिए नहीं मिल पाया था क्योंकि यीशु मसीह अभी तक अपनी महिमा में नहीं पहुंचे थे(यूहन्ना 7:39)। लेकिन अब यीशु मसीह उठा लिये गये थे (अर्थात जी उठे थे, और उन्हें राजाओं के राजा के रूप में अभिषिक्त कर दिया गया था) वे लोग पवित्र आत्मा को स्थायी रूप से अपने जीवन में ग्रहण करने वाले लोग वहीं हुए(यूहन्ना 14:16-17)!

(5) प्रथम यहूदियों पर पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना, जो पिन्तेकुस्त के दिन विश्वासी बने।

प्रेरित पतरस ने अन्य प्रेरितों के साथ मिलकर पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों और यहूदी धर्म के प्रचारकों को सुसमाचार सुनाया(प्रेरितों 2:10)। अलग अलग देशों से लगभग तीन हज़ार यहूदियों ने (यहूदी धर्म के प्रचारको ने)मन फिराया और स्वर्ग से एक उपहार के रूप में पवित्र आत्मा का दान पाया(प्रेरितों 2:38,41;प्रेरितों9:31)। इस तरीके से यीशु मसीह के प्रेरितो ने प्रथम यहूदीयों के लिए परमेश्वर के राज्य के लिए द्वार खोल दिया(मत्ती 16:18-19)। नया जन्म पाये हुए लोगों के लिए पिन्तेकुस्त एक आत्मिक कटनी का पर्व बन गया। पिन्तेकुस्त के पर्व को नये नियम के काल में पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के स्मरणोत्सव के रूप में मनाया जाता है। जिस किसी ने यीशु मसीह को ग्रहण किया उसने पवित्र आत्मा पाया (पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा पाया)और स्थानीय कलीसियाएं हर जगह फैल गयी(प्रेरितों 2:38,41; प्रेरितों 9:31)। नये नियम की पुस्तक में पवित्र आत्मा के बपतिस्में का सामान्य प्रमाण नये नये स्थानीय कलीसियाओं या घरेलू कलीसियाओं का प्रारम्भ होना था(मत्ती 18:20)।

2. पिन्तेकुस्त के दिन के बाद पवित्र आत्मा को उण्डेला जाना।

खोज और चर्चा करें। पिन्तेकुस्त के दिन के बाद पवित्र आत्मा किस प्रकार उण्डेला गया?

(1) लोगों के लिए परमेश्वर के राज्य को खोलने का अधिकार।

पढ़ें । मत्ती 16:18-19; मत्ती 18:18।

यीशु मसीह के पास वह कुँजियां हैं जो उस द्वार को खोलती और बन्द करती है(प्रकाशितवाक्य 3:7-8)। यीशु मसीह ने राज्य को खोलने और बन्द करने की कुँजियों को अपने चेलो को दिया। जिन्हें बाद मे यीशु मसीह के "बारह प्रेरित" कहा गया। उनके जीवन का मकसद यरूशलेम और यहूदिया के यहूदियों,सामरिया के सामरियों और जगत के अन्त तक रहने वाले अन्यजातियों में परमेश्वर के गवाह होना था (प्रेरितों 1:8)। यह उनके अधिकार में था कि वे सबसे पहले यहूदियों के

लिए(प्रेरितों 2), तदपश्चात सामरियों के लिए जो आधे यहूदी थे(प्रेरितों 8) और अन्ततः अन्यजातियों अर्थात गैर यहूदियों के लिए (प्रेरितों 10)परमेश्वर के राज्य के द्वार को खोलें।

(2) सामरियों अर्थात आधे यहूदियों पर पवित्र आत्मा को उण्डेला जाना जो बाद में विश्वासी बने।

पढ़ें. प्रेरितों 8:4-17।

यहूदी और सामरी पहले आपस में शत्रु थे और एक दूसरे को तुच्छ जानते थे। सामरियों ने प्रचारक फिलिप्पुस के द्वारा सुसमाचार सुनने के तुरन्त बाद पवित्र आत्मा का दान नहीं पाया,क्योंकि उन्हें स्वर्ग के राज्य के दरवाजे को खोलने के लिए यीशु मसीह के प्रेरित के आने का इन्तज़ार करना था। प्रेरित पतरस और यूहन्ना यरूशलेम से आये और उनके लिए हाथ रखकर प्रार्थना की जो इस बात का चिन्ह था कि उन्हें परमेश्वर की ओर से अधिकार दिया गया है। इस प्रकार से पतरस और यूहन्ना ने प्रथम आधे यहूदियों के लिए राज्य का द्वार खोला।

(3) गैर यहूदियों में पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना जो बाद में विश्वासी बने।

पढ़ें, प्रेरितों 11:14-18; 15:7-11।

यहूदी और अन्यजातियां भी पहले एक दूसरे के दुश्मन थे, क्योंकि अन्यजातियां मूर्तिपूजक थे और उन्होंने पुराने नियम में कई बार परमेश्वर के लोगों पर आक्रमण किया था। परमेश्वर का सबसे पहले गैर यहूदियों अर्थात कुरनेलुयस और यहूदियों अर्थात पतरस के व्यवहार में परिवर्तन लाना था। परमेश्वर को पतरस और कुरनेलियुस दोनों की सोच को बदलने के लिए उन्हें असाधारण तरीके से दर्शन के द्वारा प्रगट करना पड़ा(प्रेरितों 10:1-23)। जब अन्यजातियों में का पहले समूह ने सुसमाचार को सुना और अपने हृदय में परमेश्वर के वचनों पर विश्वास करने लगे, तो उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया (अर्थात उन्होंने नया जन्म पाया)। इसी कारण उन्होने पानी का बपतिस्मा भी लिया(प्रेरितों 10:47-48)। इस प्रकार से पतरस ने सुसमाचार प्रचार किया और गैर यहूदियों के लिए परमेश्वर के राज्य का द्वार खोल दिया।

(4) नये नियम की कलीसिया यीशु मसीह के प्रेरितों की बुनियाद पर बनी है।

पढ़ें. इफिसियों 2:20 ; प्रकाशित वाक्य 21: 14

क्योंकि यीशु मसीह ने अपने प्रेरितों को सारे देशों व जातियों (जिन्हें नये नियम में तीन प्रमुख भागों में बांटा गया है: यहूदी, आधे यहूदी और गैर यहूदी)के लिए परमेश्वर के राज्य के द्वार खोलने के लिए इस्तेमाल किया, इसलिये यीशु मसीह के प्रेरितों को "कलीसिया की नींव" कहा गया।

प्रथम यहूदियों,प्रथम सामरियो और प्रथम अन्यजातियों के बीच में इस ऐतिहासिक मसीही कलीसिया की शुरूआत के बाद(जो कि उद्धार के इतिहास का भाग है), जहां कहीं,जिस किसी ने सुसमाचार सुनकर यीशु मसीह के नाम में विश्वास किया पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया(इफिसियों 1:13;तीतुस 3:3-8;प्रेरितों 2:39; 4:4 5:32; 6:7)

ग.मसीहीयों के लिए पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने का अभिप्राय

1. एक व्यक्ति के रूप में पवित्र आत्मा (अस्तित्व)

(1) व्यक्ति

पवित्र आत्मा कोई भाववाचक शक्ति नहीं है, वरन वह स्वयं एक व्यक्ति, परमेश्वर है(प्रेरितों 5:3-4)। वह त्रीएक परमेश्वर की त्रीएकता का वह अभिन्न भाग है जिसका वर्णन तो किया जा सकता है लेकिन अलग नहीं(मत्ती 28:19)।

परमेश्वर का ईश्वरीय स्वभाव बनाये गये इस जगत के गुणों से कहीं अधिक है।

- अगर हम उसके ईश्वरीय (स्वभाव)की बात करें तो वह एक *एकता* है।
- और अगर विविधता की बात करें तो वे (व्यक्तित्व) में भिन्न हैं।

पवित्र आत्मा स्थान और समय की सीमा से परे विद्यमान है।

(2) विशेषताएं।

उसमें भी परमेश्वर के समान, अनन्त होने का गुण पाया जाता है(इब्रानियों 9:14)। उसका भी प्रकृति के साथ वही सम्बन्ध है जैसा परमेश्वर पिता के साथ, अर्थात वह सर्वव्यापी है(भजन 139:7-10), सर्वशक्तिमान(यिर्मयाह 32:17,27)और सर्वज्ञानी है(भजन 139:1-4)।

---

1 देखें मैनुएल 2, परिशिष्ट 8. "परमेश्वर व उसके पुत्र का स्वभाव"

(3) नाम

पवित्र आत्मा के नाम उसकी ईश्वरीयता (रोमियों 8:9-10),उसके चरित्र को जैसे" सत्य, प्रेम व अनुग्रह"(यूहन्ना 14:17; रोमियों 15:30; इब्रानियों 10:29) या लोगों में उसके काम जैसे " बुद्धि"(यशायाह 11:2) को दर्शाते हैं।

(4) प्रतीक।

- पवित्र आत्मा के प्रतीक विश्वासियों में उसके कामों को प्रगट करते हैं।
- वह "कबूतर के रूप में" यीशु के ऊपर उतरा, जो कि शुद्धता, नम्रता और अनुग्रह का प्रतीक है(मत्ती 3:16;यूहन्ना 1:32)।
- "अकस्मात व प्रचण्ड आंधी के रूप में" उसने लोगों को नया जन्म और नया मन प्रदान किया(यूहन्ना 3:3-8)।
- "जीवन जल के रूप में" उसने लोगों को उद्धार दिया और सन्तुष्ट करके दूसरों के लिए आशीष का कारण बनाया। (यूहन्ना 7:37-39)।
- "आग से फटती हुई जीभों के रूप में" उसने विश्वासियों को संसार की भिन्न भिन्न भाषाओं में बिना भय और निरूत्तरता के साथ सुसमाचार सुनाने का प्रेरणा प्रदान की(प्रेरितों 2:1-4)।
- "तेल के रूप में" वह विश्वासियों को याजकीय, भविष्यसूचक और राजकीय सेवाकाईयों के लिए अभिषेक करता है।
- "मुहर के रूप में" वह विश्वासियों पर अपनी मुहर लगाता है। (रोमियों 8:16)।
- "जमा राशि के रूप में"(अर्थात पहली किश्त के रूप में)उसने विश्वासियों को विश्वास दिलाया की सिद्ध परिपूर्णता मार्ग में है।। (2कुरि 1:21-22)

2.यीशु मसीही से सम्बन्ध में पवित्र आत्मा का कार्य ।

(1) पवित्र आत्मा जगत के सारे मसीहियों के लिए प्रभु मसीह का प्रतिनिधी है। वह यीशु मसीह और परमेश्वर पिता को इस संसार में प्रत्यक्ष रूप में प्रगट और वह ही बाइबल की सारी प्रतिज्ञाओं के पूरा होने का जामिन या निश्चय है। (2 कुरिन्थियों 1:22)।

पढ़ें. यूहन्ना 16:7; यूहन्ना 14:16-18

पवित्र आत्मा की अस्तित्व व कार्य। पवित्र आत्मा कोई भाववाचक शक्ति नहीं(जैसा कि केन्द्रीकरण वादी विश्वास करते हैं),वरन एक ईश्वर हस्ती है जिसकी अपनी व्यक्तिगत विशेषताएं हैं(यूहन्ना 14:26; यूहन्ना 15:26; प्रेरितों 15:28; रोमियों 8:26; 1 कुरि 12:11; 1 तीमु 4:1; प्रकाशित 22:17)। परमेश्वर पिता और पुत्र के समान पवित्र आत्मा भी एक हस्ती है(मत्ती 28:19; 1कुरि 12:4-6; 2 कुरि 13:14; 1पतरस 1:1-2)। उसमें भी परमेश्वर पिता और पुत्र के समान ईश्वरीय स्वभाव है और ये तीनों आपस में घुले हुए हैं।

त्रीएक परमेश्वर के कार्य परमेश्वर के सत्तामूलक तत्वों (अभौतिक, अनन्त त्रीएक) पर आधारित हैं। पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना (पवित्र आत्मा का बपतिस्मा) परमेश्वर पिता का काम(प्रेरितों 2:17;प्रेरितों 11:16-17) और साथ साथ परमेश्वर पुत्र का(मत्ती 3:11 ; प्रेरितों 2:33) काम है। ठीक इसी प्रकार से परमेश्वर पिता,पुत्र और पवित्र आत्मा शिक्षा देते हैं(यूहन्ना 14:26); मसीहीयों की सारे सत्य में अगुवाई करते(यूहन्ना 16:13) और लोगों को उनके पापों और अधार्मिकता के प्रति निरूत्तर करते हैं(यूहन्ना 16:8)।

यीशु मसीह का मृतकों में से जी उठना,यीशु मसीह का स्वर्गारोहण और पवित्र आत्मा का लोगों पर उण्डेला जाना, अनोखी ऐतिहासिक घटनाएं(उद्धार की कहानियां) हैं। इस प्रकार की घटनाएं आपको अन्य किसी धर्म में नहीं मिलेगीं।

यीशु मसीह परमेश्वर पिता से उसके चेलों को पवित्र आत्मा देने के लिए कहते हैं। यीशु ने कहा, "मैं पिता से विनती करूँगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे"(यूहन्ना 14:16)। ग्रीक भाषा में "प्रार्थना" के लिए दो शब्द है: मांगना और निवेदन करना।

-क्रिया "मांगना" (ग्रीक:ऐटिओ) शब्द का इस्तेमाल तब किया जाता है जब कोई निम्न स्तर का/ दास, उच्च स्तर के या किसी महान व्यक्ति से कुछ मांग रहा हो। इस शब्द का इस्तेमाल का लोग परमेश्वर से "विनती" करते समय करते हैं(यूहन्ना 4:9-10;15:7,16; 16:23-24,26)।

-क्रिया "निवेदन करना"(ग्रीक: ईरोटाओ) शब्द का इस्तेमाल तब किया जाता है जब कोई व्यक्ति अपनी बराबरी वाले व्यक्ति से कुछ मांग रहा हो। इस शब्द का इस्तेमाल केवल तब किया गया जब यीशु मसीह अपने स्वर्गीय पिता से अपनी समानता के आधार पर प्रार्थना करते हैं (यूहन्ना 14:16;17:9;15,20)!

हमें कभी भी यीशु मसीह को इस तरह से नही देखना चाहिए जैसे कि वह परमेश्वर पिता से भीख मांग रहा है। यीशु मसीह ने उद्धार का काम पूरा करने के द्वारा हमारी सारी प्रार्थनाओं के जवाबों को कमा लिया है।

इस धरती पर पवित्र आत्मा मसीहियों के बीच में यीशु मसीह का प्रतिनिधी है। यीशु ने कहा," "मैं पिता से विनती करूँगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। अर्थात सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है: तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और वह तुम में होगा।"(यूहन्ना 14:16)

"सहायक" शब्द का मूल अर्थ (ग्रीक: पैराक्लेटौस): "किसी को आपकी मदद करने के लिए बुलाया गया है"। इसका अर्थ लैटिन भाषा के समान उदासीन नहीं है अर्थात: "समर्थक" या "सलाहकार" और न ही ग्रीक भाषा का उदासीन अर्थ है(जैसा कि अय्यूब 16:2 में दिया गया है)। इसका अर्थ सक्रिय "सहायक" "मध्यस्थ" और "प्रतिनिधी" है जैसा कि बहुत से ग्रीक के साहित्यों में इस्तेमाल किया गया है।

- स्वर्ग में प्रतिनिधित्व (ग्रीक: पैराक्लेटोस)करने वाला मसीह है। यूहन्ना की पहली पत्री में यीशु को धरती पर विश्वासियों का स्वर्गीय प्रतिनिधि के रूप में सम्बोधित किया गया है। वह परमेश्वर पिता से मसीहियों की ओर से बात करता है(1यूहन्ना 2:1)। वह स्वर्ग में लगातार परमेश्वर पिता से निवेदन करता है। अत: यीशु मसीह स्वर्गीय सहायक या धरती पर मसीहियों का प्रतिनिधित्व करने वाला है।
- धरती पर पवित्र आत्मा प्रतिनिधि (ग्रीक : पैराक्लेटोस)है। यूहन्ना के सुसमाचार में पवित्र आत्मा धरती पर मसीहीयों के बीच यीशु मसीह का प्रतिनिधी है। वह स्वर्ग में यीशु मसीह की ओर से मसीहियों से बात चीत करता है(यूहन्ना 14:16-17;यूहन्ना 16:13-15)। पवित्र आत्मा यीशु मसीह और मसीहियों के बीच में मध्यस्थ है। वह यीशु मसीह की बातों को लेकर स्पष्ट रूप में समझाता है(यूहन्ना 14:26; यूहन्ना 16:14)। वह यीशु मसीह द्वारा किये गये उद्धार के कार्यों (नया जन्म, धर्मी ठहराये जाने, शुद्धिकरण) को धरती पर रहने वाले लोगों के जीवन में लागू करता है। वह इस धरती पर यीशु की महिमा करता है(यूहन्ना 16:13-15)। वह यीशु धरती पर रहने वालों के बीच में यीशु मसीह का प्रतिनिधी है।

पवित्र आत्मा "दूसरा" प्रतिनिधि हैं, लेकिन इस अर्थ यह नहीं है कि वह यीशु से अलग है। जिस प्रकार से पवित्र आत्मा स्वर्ग में मसीहियों का प्रतिनिधि है ठीक उसी प्रकार से वह पृथ्वी पर मसीह का प्रतिनिधि भी है। पवित्र आत्मा मसीह का आत्मा है जो मसीहियों के साथ और मसीहियों में रहता है(यूहन्ना14:16-1)। वह "आपमें रहने वाला मसीह" है(रोमियों 8:9-10; 2कुरिन्थियों 3:17-18)। जब यीशु मसीह इस दुनिया में देहधारित अवस्था में रहते थे तो वह एक समय में एक ही स्थान पर हो सकते थे। लेकिन अब वही यीशु मसीह पवित्र आत्मा के रूप में, धरती के हर कोने में एक ही समय में उपस्थित हैं। आज मसीहियों के लिए पवित्र आत्मा वह सब कुछ है जो यीशु मसीह इस धरती पर रहते हुए उनके लिए होता। इसलिए यीशु ने कहा," मेरा(अर्थात मानवीय स्वभाव में यीशु का जाना) जाना तुम्हारे लिए अच्छा होगा", क्योंकि तब ही पवित्र आत्मा (ईश्वरी स्वभाव में प्रभु यीशु मसीह)आ सकता है(यूहन्ना 16:7)। यीशु मसीह ने प्रतिज्ञा की,"मैं तुम्हें अनाथ न छोडूगां: मैं तुम्हारे पास आता हूँ"(यूहन्ना 14:18)। और "देखो मैं जगत के अन्त तक तुम्हारे साथ हूँ"(मत्ती 28:20)

पवित्र आत्मा अल्प-आयु वाले बच्चों व गुलामों को जो व्यवस्था के अधीन हैं अपनी परिपक्व सन्तानों और परमेश्वर के वारिस के रूप में बदल देता है। पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद यीशु मसीह का आत्मा मसीहियों के "साथ" और मसीहियों में होगा अर्थात वह सदा उनकी सहायता के लिए मौजूद होगा और उनके जीवन व उनके हृदय में रहेगा। परमेश्वर (मसीह) पवित्र आत्मा के द्वारा मसीही कलीसिया (इफिसियों 2:22)में रहने के लिए और कलीसिया के सदस्यों को राजा, याजक और संसार के सारे देशों के लिए भविष्यद्वक्ता बनाता है(1पतरस 2:9-10)।

- पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने से पहले, परमेश्वर के बच्चे(पुराने नियम के समय के दौरान)" अल्प-आयु वाले बच्चे व गुलाम अर्थात व्यवस्था के अधीन थे"।
- लेकिन पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद, परमेश्वर के बच्चे(नये नियम के काल में)"अनुग्रह के अधीन परिपक्व सन्तान व परमेश्वर के वारिस) हैं। (गलातियों 4:1-7; 5:4; रोमियों 6:14)।

परमेश्वर के नये नियम के लोग "परमेश्वर का आत्मिक मन्दिर हैं"(1 कुरिन्थियों 6:16)। परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों(इस्राएल में विश्वासियों) ने अपने राष्ट्रीय चरित्र(यहूदी मत) को छोड़ दिया और अब वे अन्तर्राष्ट्रीय लोग बन गये।

(यूहन्ना 10:16;प्रकाशित वाक्य 5:9-10)। यहूदी और गैर यहूदी मसीहियों ने अपने "स्वतन्त्र" (जो गुलाम नहीं हैं) और "पुरूष" (स्त्री न होने) के घमण्ड को छोड़कर अब वे "अब्राहम की सन्तान व वारिस" बन गये हैं। (गलातियों 3:28-29)।

(2) पवित्र आत्मा मसीह द्वारा किये गये सारे उद्धार के कामों को मसीहीयों के जीवन में लागू करता है।

यीशु ने कहा,"प्रतिनिधि या सहायक सत्य का आत्मा है। संसार (गैर मसीही पापों में डूबे लोग) इसे स्वीकार नहीं कर सकता,क्योंकि वह उसे न तो देखता है और न उसे जानता है; तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और वह तुम में होगा।(यूहन्ना 14:17)। और यूहन्ना रचित सुसमाचार में यीशु मसीह को "सत्य" (यूहन्ना 14:6)कहा गया है क्योंकि उसने पुराने नियम को पूरा (मत्ती 5:17),अस्विकार (कुलुस्सियों 2:14) और रद्द (इफिसियों 2:14-15)किया और नये नियम की "वास्तविकता" को परिचित करवाया है(यूहन्ना 1:17; कुलुस्सियों 2:17; इब्रानियों 8:5 इब्रानियों 10:1)। उसे "सत्य के आत्मा" के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि सम्पूर्ण इतिहास में वह नये मसीहियों के जीवन में यीशु मसीह के उद्धार के निमित्त किये गये कामों का इस्तेमाल करता है।

"संसार" पवित्र आत्मा को ग्रहण नहीं कर सकता वह उन लोगों से मिलकर बना संसार है जो अंधकार को ज्योति से ज्यादा प्रेम करते है, क्योंकि उनके काम बुरे हैं(यूहन्ना 3:19)। यह संसार खुले तौर पर मसीह, मसीही कलीसियाओं और मसीहियों का विरोधी है(यूहन्ना 15:18)। यह संसार शैतान के झूठ पर विश्वास करता है(यूहन्ना 8:44;यूहन्ना 14:30), आत्मिक मामलों को न तो ग्रहण कर सकता है न समझ सकता है(1 कुरिन्थियो 2:12-14)और पवित्र आत्मा को मान्यता नहीं देता(यूहन्ना 12:22-37;प्रेरितों 2:12-17)। पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद से यह संसार पवित्र आत्मा को (मसीह की आत्मा को)स्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि न तो वे उसे देखते हैं(निरीक्षण) और न ही वे उसको जानते या उसे स्वीकार करते हैं।

दोनो क्रियाएं अर्थात "देखना" और "जानते" दोनों ही वर्तमान अपूर्ण करल में हैं। लेकिन सच्चे विश्वासी उसे व उसके कामों को अपनी आत्मिक आंखों से देखते, मानते और अपने जीवनों में उसका अनुभव करते हैं।

(3) पवित्र आत्मा यीशु मसीह की उपस्थिति को मसीहियों के लिए सजीव बनाती है।

यीशु ने कहा,"मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोडूगा;मैं तुम्हारे पास आता हूँ (यूहन्ना 14:18)। हालाकि यीशु मसीह अपने प्राकृतिक मानवीय रूप में इस धरती से अपने चेलों को छोड़कर स्वर्ग चले गये, लेकिन वह पवित्र आत्मा के रूप में उनके पास वापस आ गये(पिन्तेकुस्त)।

पवित्र आत्मा मसीहियों को हर वह बात स्मरण कराता है जो यीशु मसीह ने इस दुनिया में रहते समय उन्हें सिखाई थी और जो उन्हें जानना चाहिए(यूहन्ना 14:26), मसीह की गवाही देती है(यूहन्ना 15:26),मसीह की महिमा करती है(यूहन्ना 16:13-15)अर्थात वह मसीहीयों के लिए ईश्वरीय विशेषताओं को हकीकत तथा इस संसार में रहने वाले मसीहियों के लिए यीशु मसीह को केन्द्र बिन्दू बना देता है।

अत: पवित्र आत्मा के पिन्तेकुस्त के दिन उण्डेले जाने के द्वारा, यीशु मसीह अपने मानने वालों के पास धरती पर पुन: वापस आ गये। यूहन्ना 14:18 भविष्य में यीशु मसीह के दूसरे आगमन के बारे में लिखा गया वचन नहीं, वरन यीशु मसीह के पवित्र आत्मा के रूप में वापस आने के सम्बन्ध में लिखा गया वचन है। इसी कारण मसीह के साथ उसकी मृत्यु और उसके पुनरूत्थान में होकर घनिष्ठ सम्बन्ध का ज्ञान व अनुभव पवित्र आत्मा का एक फल है(रोमियों 8:9-11,15-17; 1 कुरिन्थियों 12:12-13)। परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र, पवित्र आत्मा के रूप में मसीहियों के साथ तथा उनमें रहते हैं(यूहन्ना 14:23)।

3. लोगों में पवित्र आत्मा के कार्य।

(1) पवित्र आत्मा इस संसार में लोगों को निरूत्तर करता है।

वह इस संसार के लोगों को उनके पापों(उनकी मूर्तियों),धार्मिकता(मसीह की) और न्याय(यदि तुम धार्मिकता को अस्वीकार करो)के प्रति निरूत्तर करता है। (यूहन्ना 16:8-10)।

(2) पवित्र आत्मा इस संसार में यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है(यूहन्ना 15:26;16:13-15)।

वह इस संसार में मसीहियों के लिए वह सब कुछ होने के लिए उण्डेला गया जो मसीह होता अगर वह संसार में इस समय उपस्थित होता।

(3) पवित्र आत्मा लोगों को रूपान्तरित करता है।

वह लोगों को नया जन्म देता है (यूहन्ना 3:3-8; तीतुस 3:3-7), वह लोगों को परमेश्वर का वचन सुनने में मदद करता है(यूहन्ना 14:26;इफिसियों 6:17) और लोगों को परमेश्वर का वचन पालन करने में मदद करता है(1पतरस 1:2)। वह मसीहियों को ज्यादा से ज्यादा शुद्ध करता है(गलातियों 5:13-26) और मसीहियों को कठिनाईयों के बावजूद सुरक्षित रखता है(रोमियों 8:26-27)।

4.कलीसिया में पवित्र आत्मा के कार्य

(1) पवित्र आत्मा यीशु मसीह को महिमान्वित करता है।

वह मसीहियों के जीवन और उनके अनुभवों में हमेशा यीशु मसीह को महिमा देता है(यूहन्ना 16:14)।

(2) पवित्र आत्मा कलीसिया का संचालन करता है।

नये जन्म (पवित्र आत्मा में बपतिस्मा)के द्वारा वह एक विश्वासी को मसीही कलीसिया का एक सच्चा सदस्य बनाता है(1कुरिन्थियों 12:12-13)। वह हर एक मसीही को परमेश्वर का निवासस्थान बनाता है(इफिसियों 2:22;1पतरस 2:4-5)। वह प्राचीनों का कलीसिया का सच्चा अध्यक्ष ठहराता है(प्रेरितों 15:28)। वह ही मसीही सभाओं और सम्मेलनों की अगुवाई करता है(इफिसियों 5:18-19)। वह अद्‌भुत तरीके से मसीहियों को आत्मिक वरदान देता है ताकि वे दूसरों की सेवा कर सकें तथा कलीसिया बनाने में मदद कर सकें(रोमियों 12:4-8)।

(3) पवित्र आत्मा इस संसार में मसीही मिशन को कार्यान्वित करता है।

वह सुसमाचार सुनाने,चेला बनाने और नयी मण्डलियों की स्थापना करने के लिए अलग अलग मसीहियों को चुनता है(प्रेरितों 13:1-4)। वह प्रत्येक मसीही कार्यकर्ता को अपना अलग लक्ष्य प्रदान करता है(1कुरिन्थियों 3:5-9;12:4-6,11)। और वह सताव के दौरान मसीहियों कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करता है। (प्रेरितों 13:49-52)।

घ.पवित्र आत्मा में बपतिस्मा

1.अभिव्यक्ति "पवित्र आत्मा में बपतिस्मा"।

(1) अभिव्यक्ति"पवित्र आत्मा में बपतिस्मा"।

यह अभिव्यक्ति "पवित्र आत्मा में बपतिस्मा"(ग्रीक :बैपटाइज़ो)नये नियम में केवल सात बार सामने आता है(मत्ती 3:10-12; मरकुस 1:8;लूका 3:16;यूहन्ना 1:33; प्रेरितों 1:5;प्रेरितों 11:14-18 व 1 कुरिन्थियों 1:5; प्रेरितों 11:14-18 और 1 कुरिन्थियों 12:12-13)। सातों स्थानों में इस अभिव्यक्ति का अर्थ मसीही जीवन की शुरूआत(पवित्र आत्मा में नया जन्म)है। "पवित्र आत्मा में बपतिस्मा" स्पष्ट तौर पर परमेश्वर के राज्य में विश्वासियों एकत्र होने से जुड़ा है, जबकि "आग से बपतिस्मा" विश्वासियों के अन्तिम न्याय से जुड़ा है(मत्ती 3:10-12)। "पवित्र आत्मा में बपतिस्मा" लोगों के विश्वास करने पर प्राप्त बपतिस्मा को (प्रेरितों 10:43-44; प्रेरितों 15:7-9; यूहन्ना 1:12-13 ;7:37-39; प्रेरितों 19:2;1कुरिन्थियों 12:3; इफिसियों 1:13; तीतुस 3:4-8) या लोगों के परिवर्तित होकर उद्धार पाने और कलीसिया में जुड़ने को दर्शाता है(प्रेरितों 2:38-41; प्रेरितों 11:18)।

(2) भविष्यद्वाणी और उनका पूरा होना।

भविष्यद्वाणी।

पवित्र आत्मा के बपतिस्में के बारे में पहले ही पुराने नियम में भविष्यद्वाणी की गयी है(यहेजकेल 36:25-27;योएल 2:28-32)

भविष्यद्वाणियों का उद्धार के इतिहास में पूरा होना।

पवित्र आत्मा में बपतिस्मा निम्नलिखित क्रम में हुआ:

- यीशु मसीह के प्रथम चेलों के लिए इसका जिक्र प्रेरितों 2:1-4 में किया गया है
- पहले यहूदी के सम्बन्ध में इसका जिक्र प्रेरितों 2:37-41(प्रेरितों 1:8, यरूशलेम और यहूदिया)।
- पहले सामरी के लिए इसका जिक्र प्रेरितों 8:12-17 में किया गया है(प्रेरितों 1:8, सामरिया)
- पहले अन्यजातियों में से बने विश्वासी का जिक्र प्रेरितों 10:34-48 में दिया गया है(प्रेरितों 1:8;11:14-18; 15:7-11)जगत के छोर तक)

सामान्यत: पूरा होना।

इसलिए जो कोई सुसमाचार सुनता और यीशु मसीह में विश्वास करता है,"पवित्र आत्मा पाता है"(प्रेरितों 2:38-39),"पवित्र आत्मा की छाप पाता"(इफिसियों 1:13-14) या "पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाता है"और इस तरह वह मसीह की देह (सार्वभौमिक कलीसिया) का एक अंग बन जाता है (1 कुरिन्थियों 12:12-13)।

2. पवित्र आत्मा में बपतिस्में का अर्थ।

(1) पवित्र आत्मा में बपतिस्में को व्यक्त करने के लिए बाइबल में विभिन्न वाक्यों का इस्तेमाल किया गया है

- परमेश्वर में जन्म पाना(यूहन्ना 1:12-13), आत्मा में जन्म पाना(यूहन्ना 3:5) नया जन्म/ स्वर्ग से जन्म पाना(यूहन्ना 3:3,7)
- पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा पाना (प्रेरितों 1:5;11:16; 1 कुरिन्थियों 12:13)।
- पवित्र आत्मा का उन पर उण्डेला जाना(प्रेरितों 2:17,33;तीतुस 3:6)।
- पवित्र आत्मा प्राप्त करना(प्रेरितों 8:15; 10:47)
- पवित्र आत्मा का उतरना(प्रेरितों 8:16; 10:44; 11:15)
- ऐसे वरदानों को प्राप्त करना जिसमें पवित्र आत्मा स्वयं शामिल है(प्रेरितों 2:38;11:17;15:8)
- पवित्र आत्मा द्वारा छाप लगना(इफिसियों 1:13)
- पवित्र आत्मा द्वारा नये जन्म का स्नान और नया बनाने के द्वारा(तीतुस 3:5;प्रेरितों 11:14,18;यूहन्ना 3:3-8)
- ये सारी अभिव्यक्तियां किसी व्यक्ति द्वारा यीशु मसीह पर विश्वास करने पर पवित्र आत्मा प्राप्त करने को व्यक्त करती हैं।

(2) पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने का अर्थ पवित्र आत्मा पाना है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति नया जन्म प्राप्त करता और उद्धार पाता है।

जब अन्यजाति में लोगों ने पहली बार सुसमाचार सुना और यीशु मसीह पर विश्वास किया, तो पवित्र आत्मा ठीक उस रीति से उन पर उतरा जिस प्रकार से वह प्रारम्भ में चेलों पर उतरा था। परमेश्वर ने उन्हें बहुत से वरदानों को दिया जिसमें पवित्र आत्मा स्वयं शामिल था और इस घटना को पवित्र आत्मा में बपतिस्मा कहा गया(प्रेरितों 11:15-17)। यह अन्यजातियों का प्रथम पिन्तेकुस्त था! जिसके परिणाम स्वरूप जिन लोगों ने यीशु मसीह पर विश्वास किया, उन्होने यहूदियों के समान अर्थात जिन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास किया था, उद्धार पाया(प्रेरितों 2:18,21;11:14; 15:11; इफिसियों 1:13)। परमेश्वर ने उन्हें भी जीवन के लिए मन फिराव का दान दिया है(प्रेरितों 11:18)। *परमेश्वर ने उनके हृदयों को शुद्ध किया* (प्रेरितों 15:9)।

(3) पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने का अर्थ पवित्र आत्मा पाना है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति मसीह की देह और उसकी कलीसिया का एक भाग बन जाता है।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने कहा कि यीशु मसीह लोगों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा और इस तरह से वह गेहूँ को खत्ते में इकट्ठा करेगा(मत्ती 3:11-12)। पौलुस ने पिन्तेकुस्त के 26वर्षों के पश्चात यहूदियों और कुरिन्थियों में रहने वाले अन्यजातियों में से आये विश्वासियों को लिखा कि केवल कुछ खास समूह के लोगों को ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिला था, बल्कि"हम सभी लोगों ने एक आत्मा द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा पाया" जिसे मसीह की देह कहा जाता है। जिसमे दुनिया भर के प्रेरित व विश्वासी भी शामिल हैं(1कुरिन्थियों 12:12-13)। अत: जब लोग यीशु मसीह में विश्वास करने लगे तो उन्होंने एक आत्मा द्वारा मसीह की एक देह होने के लिए बपतिस्मा पाया(इफिसियों 1:22-23)।

(3) पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने का अर्थ पवित्र आत्मा पाना है, जिसके द्वारा पवित्र आत्मा विश्वासी में रहने और काम करने के लिए आता है।

पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाते समय, पवित्र आत्मा, जो कि वास्तव में यीशु मसीह का आत्मा है(रोमियों 8:9-10) एक विश्वासी की देह में वास करने के लिए आता है(यूहन्ना 7:37-39;1 कुरिन्थियों 6:19-20)। तब पवित्र आत्मा यीशु मसीह द्वारा उद्धार के निमित्त पूरे किये गये कामों को विश्वासी के जीवन में कार्यान्वित करना प्रारम्भ कर देता है। समय बीतने पर यह प्रमाणिक हो जाता है कि पवित्र आत्मा ने मसीहीयों को अनेकों वरदान दिये हैं।

ड़.पवित्र आत्मा द्वारा भरा जाना

1. पवित्र आत्मा से भरे जाने का अर्थ।

(1) पवित्र आत्मा कोई भाववाचक नहीं वरन एक सामर्थी व्यक्ति है।

" पवित्र आत्मा से भरे जाने" का अर्थ क्या है? यदि पवित्र आत्मा कोई भाववाचक शक्ति होता, जिसे आप किसी पैमाने से नाप कर प्राप्त कर सकते (जैसे 30%)तो आपका प्रमुख प्रश्न होता कि,"मैं किस तरह ज़्यादा से ज़्यादा पवित्र आत्मा को पा सकता हूँ(उदाहरण 60% या 100%)?

लेकिन यदि,पवित्र आत्मा एक शक्ति शाली व्यक्ति अर्थात स्वयं परमेश्वर है, जो मसीहीयों में वास करने के लिए आया है, तो आपका प्रमुख प्रश्न यह होना चाहिए कि,"पवित्र आत्मा किस तरह मुझ पर ज़्यादा कब्ज़ा कर सकता है?" मसीही कभी पवित्र आत्मा पर कब्ज़ा नहीं करता बल्कि पवित्र आत्मा उस पर कब्ज़ा करता है। पवित्र आत्मा से भरे जाने (पवित्र आत्मा की परिपूर्णता)का प्रश्न, जिसे पवित्र आत्मा ही पूरा कर सकता है, असल में हमारे जीवन और हृदय में यीशु मसीह की आत्मा द्वारा प्रभुता करने का प्रश्न है।"किस तरह यीशु मसीह एक राजा और प्रभु के रूप में मेरे जीवन को प्रभावित व निर्धारित कर सकते हैं?"

पवित्र आत्मा से भरे जाने का अर्थ है कि मैंने अपने जीवन को पूरी तरह से परमेश्वर के अधीन कर दिया है और अब परमेश्वर पूरी तरह मेरे जीवन पर नियन्त्रण करता है। इसका अर्थ है कि मैंने अपने जीवन से अहम को निकार दिया है और अब मैं अपनी महिमा नहीं वरन, केवल उस त्रीएक परमेश्वर की महिमा चाहता हूँ(रोमियों 11:36)। इसका अर्थ है कि परमेश्वर मेरे जीवन का बाइबल के अनुसार चलाता,और मुझे ज्यादा से ज्यादा मसीह के समान बनाता और मेरी सेवाकाई को अधिक फलदायी बनाता है।

(2) पवित्र आत्मा से भरे जाने के सम्बन्ध में की गयी प्रतिज्ञा।

यीशु मसीह ने पवित्र आत्मा से भरे जाने के बारे में क्या प्रतिज्ञा की थी? यीशु ने मसीहियों से प्रतिज्ञा की है कि उनमें से जीवन के जल की नदियां बह निकलेगीं(यूहन्ना 7:37-39)। उसने अपने चेलों से विशेष रूप में प्रतिज्ञा की कि वे जगत के छोर तक उसके गवाह होने की सामर्थ्य पाएंगे(प्रेरितों 1:8)

(3) पवित्र आत्मा से भरे जाने का वर्णन ।

किस प्रकार से बाइबल में उद्धार का इतिहास पवित्र आत्मा से भरे जाने का वर्णन करता है?

इसके बहुत से सम्भावित परिणाम हैं: लेकिन आप इस बात का ध्यान दें कि ये केवल ऐतिहासिक चित्रण है कोई आज्ञा या आदेश या शिक्षा नहीं जिस वर्तमान मसीही कलीसियाओं में लागू करना ज़रूरी हो।

- 1शमूएल 10:6-12। शाऊल नबियों के समूह के बीच में नबूवत की।
- लूका 1:41-43। एलिज़ाबेथ को विशेष संज्ञान प्राप्त हुआ कि मरियम की सन्तान मसीह था।
- लूका 1:67-79 जकर्याह ने मसीह के आने और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के भविष्य के बारे में भविष्यद्वाणी की।
- लूका 4:1-2। यीशु ने शैतान की परिक्षाओं पर विजय प्राप्त की।
- प्रेरितों 2:4। यीशु के सभी चेलों ने(लगभग 120) उस समय में विद्यमान व नयी भाषाओं में परमेश्वर के अद्भुत कामों की प्रशसां करने की योग्यता प्राप्त की।
- प्रेरितों 4:8 पतरस को अगुवों की मण्डली को सम्बोधित करने की प्रेरणा मिली। (मरकुस 13:11)
- प्रेरितों 4:31. चेलों ने परमेश्वर के वचन को बांटने का हियाव पाया।
- प्रेरितों 6:3, 8:-10. प्रथम डीकन, विशेष करके स्तीफनुस ने आश्चर्यजनक बुद्धिमानी और चमत्कारों के साथ लोगों को सम्बोधित किया।
- प्रेरितों 7:55, स्तीफनुस ने परमेश्वर की महिमा और जी उठे मसीह का दर्शन देखने की योग्यता प्राप्त की।
- प्रेरितों 9:17-22. पौलुस सामर्थी ढंग से बढ़ता गया और उसने अपने शत्रुओं को विफल करने की योग्यता प्राप्त की।
- प्रेरितों 11:24. बरनबास को बहुत से लोगों को मसीह में लाने की योग्यता मिली।
- प्रेरितों 13:9-11। पौलुस ने झूठे भविष्यद्वक्ता के विरूद्ध परमेश्वर के न्याय की उदघोषणा करने का अधिकार पाया।
- प्रेरितों 13:52. नये विश्वासियों सताव के बावजूद आनन्द मनाने की योग्यता प्रदान की गयी।

जो घटनाएं पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने से पहले कभी कभार हुआ करती थीं, वह आत्मा के उण्डेले जाने के बाद नियमित तौर पर होने लगीं। पवित्र आत्मा से भरे गये विश्वासी भी अपने जीवन में आत्मा के कामों को देख पाए।

2. पवित्र आत्मा से भरे जाने की शिक्षा।

पढ़ें. इफिसियों 5:15-21.

खोजें और चर्चा करें। पवित्र आत्मा से भरे जाने के बारे में बाइबल की शिक्षा क्या स्पष्ट करती है?

नोट्स।

(1) मसीहीयों को लगातार पवित्र आत्मा द्वारा भरे जाने की आवश्यकता है।

इफिसियों 5:18-21 में मुख्य क्रिया " पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ" है(5:18)। यह बात एक आज्ञा है (आदेशसूचक भाव),जो कि लगातार इस्तेमाल करने योग्य बात(वर्तमान काल) है और इसका इस्तेमाल परमेश्वर के तरीके (निष्क्रिय स्वर)से हुआ है। अत: बाइबल स्पष्ट रूप से आज्ञा देती है कि मसीहीयों को नियमित तौर पर या बार बार पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना चाहिए। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन को ही सामान्य मसीही जीवन कहा जाता है।

(2) आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन अपनी बातों,गीतों, संगीत,धन्यवाद व अधीनता के कारण पहिचाने जाते हैं।

मुख्य क्रिया से जुड़ी हुई पाँच क्रियाएं अर्थात बोलना,गाना,संगीत बजाना,धन्यवाद देना और अधीन रहना(इफिसियों 5:19-21) हैं, जो मुख्य क्रियाओं से जुड़ी होती हैं। वे मुख्य क्रिया के साथ बारी बारी करके काम करती है और अपने आप में उस आज्ञा का पालन लगातार या बार बार करती हैं। अत: बाइबल बताती है कि आत्मा से परिपूर्ण मसीहियों में निम्नलिखित गुण पाये जाते हैं:

- एक आत्मा से पूरिपूर्ण मसीही जन अनैतिक पार्टियों में भाग नहीं लेता जहाँ पर मदिरा पान, दंगा फसाद और अनैतिक बातें होती हैं (इफिसियों 5:3-13; 1पतरस 4:3-4)। इसके बदले वह दूसरे लोगों के साथ मिलकर संगति करना और भजन कीर्तन करना, और आपस में एक दूसरे की उन्नति करने व परमेश्वर की महिमा के लिए संगीत बजाना पसन्द करेगा। यह आत्मा के फलों व संयम का एक उदाहरण है(गलातियों 5:23;1कुरिन्थियों7:9;9:24-27)।
- आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन लोगों व परिस्थितियों के प्रति नकारात्मक नहीं होता। वह कभी शिकायत करनेवाला और बहस करने वाला नहीं होगा(फिलिप्पियों 2:14) और न ही असन्तुष्ट और कृतघ्न होगा। बल्कि वह सभी परिस्थितियों में सन्तुष्ट (1 थिस्लुनिकियों 5:18)। यह आत्मा के फल आनन्द का एक उदारहण है(गलातियों 5:22)।
- आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन घमण्डी या व्यक्तिगत स्वाधीनता पर अर्थात किसी पर निर्भर न होने वाले नहीं होते। वह कभी असहयोग करने वाला,फूट डालनेवाला और स्वार्थी नहीं होगा। वरन वह अधीन रहनेवाला होगा। उदाहरण के लिए। वह सबसे छोटा बनने के लिए तैयार होगा। वह उन स्थानों पर जाना पसन्द करेगा जहां और कोई नहीं जाना चाहता या नही जा सकता(यूहन्ना 13:1-17)। वह दूसरों को खुद से बढ़कर मानेगा(रोमियों 12:10)। वह सर्वदा दूसरों की भलाई की खोज करेगा(फिलिप्पियों 2:4)। वह मैत्री स्वभाव का, शिष्ट,भ्रद,नम्र और समझदार व्यक्ति होगा। यह आत्मा के एक फल नम्रता का उदाहरण है(गलातियों 5:23)।

(3) आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन को उसके व्यवहार, बुद्धि,प्राथमिकताओं,ज्ञान और आज्ञाकारिता के द्वारा पहिचाना जाता है।

नये नियम के ग्रीक अनुवाद में इफिसियों 5:17 व इफिसियों 5:18 के बीच में एक संयुक्तबोधक "और" पाया जाता है। अत: आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन में सारे गुण होते हैं जिन्हें हम इफिसियों 5:15-17 में पाते हैं।

- आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन अपने व्यवहार या अपनी जीवन शैली को लेकर सावधान रहता है। वह ऐसा जन नहीं होता जो परमेश्वर को अच्छे लगने वाले कामों को करने की बजाय अपनी ही दृष्टि में सही लगने वाले कामों को करता रहे(न्यायियों 21:25)। वह अपने सारे कामों व व्यवहारों से प्रदर्शित करेगा कि उसने अपने पुराने मनुष्यत्व व जीवन शैली का उतारकर नये पवित्र और धार्मिक जीवन शैली को पहिल लिया है।
- आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन पूरी तरह से व्यवहारिक बुद्धि से पूरिपूर्ण होता है। वह सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी तरफ से पूरी कोशिश करता है। वह अपने बाइबल के ज्ञान को अपने व्यवहारिक जीवन में इस तरह इस्तेमाल करने का प्रयास करता है जिससे परमेश्वर को महिमा मिले।
- आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन परमेश्वर द्वारा दिये गये समय और अवसर का इस्तेमाल करता है।
- आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन लगातार बाइबल में बताए तरीके द्वारा परमेश्वर को जानने और उसकी इच्छा पूरी करने का प्रयास करता है।

च.पवित्र आत्मा के फल

पढ़ें. रोमियों 8:9-16; गलातियों 5:13-25

खोजें और चर्चा करें। किस प्रकार से पापमय स्वभाव या पवित्र आत्मा की उपस्थिति एक मसीही व्यक्ति के जीवन में अपने आप को प्रगट करता है?

नोट्स।

1. पापमय स्वभाव का प्रगटीकरण।

मनुष्य के जीवन में बसा हुआ पापमय स्वभाव अपने आप को शारीरिकत पापों जैसे यौन अनैतिकता या अधिकता,आत्मिक पापों जैसे मूर्तिपूजा और जादू टोना और सामाजिक पापों जैसे स्वार्थी महत्वाकाक्षाओं और झगड़ों में प्रगट करता है।

2. पवित्र आत्मा का प्रगटीकरण।

हमारे भीतर वास करने वाला आत्मा अपने आपको आत्मा के फलों द्वारा प्रगट करता है। वह अपने आपको आत्मिक गुणों जैसे प्रेम, आनन्द और शान्ति;सामाजिक गुणों जैसे धीरज, कृपा और भलाई ; रिश्तों के गुणों जैसे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता,लोगों के प्रति शिष्टाचार और अपने आप में संयम द्वारा प्रगट करता है।

अगर आप एक मसीही जन हैं, तो आप यीशु मसीह के हैं और यीशु मसीह का आत्मा आपकी देह में वास करता है। इसके अलावा आप अपने पापमय स्वभाव के अधीन रहने के लिए बाध्य नहीं है, लेकिन आपका कर्तव्य होता है कि आप अपने भीतर वास करने वाले पवित्र आत्मा के चलाए चलें। पवित्र आत्मा पापमय स्वभाव के विपरीत है और वह पापमय स्वभाव को मारने में आपकी मदद करेगा। पवित्र आत्मा आपके भीतर प्रेम, आनन्द,शान्ति,धीरज और भलाई, कृपा, विश्वासयोग्यता, नम्रता और धीरज उत्पन्न करेगा। पवित्र आत्मा आपको उस मार्ग में चलाएगा जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है(भजन 32:8;भजन 143:10)। इस तरह से पवित्र आत्मा आपके जीवन को चलाने वाला चालक शक्ति बन जाता है और आप ज्यादा से ज्यादा उसके प्रति प्रतिबद्धता दिखाते और उसके साथ सहयोग करते हैं।

छ. पवित्र आत्मा के आत्मिक वरदान

1. आत्मिक वरदानों का स्वरूप।

(1) आत्मिक वरदान वास्तव में परमेश्वर के अनुग्रह का वरदान है जिसमें उसकी योग्यताएं या भूमिकाएं शामिल हो सकती हैं।

"आत्मिक वरदान भिन्न प्रकार के हैं"(1कुरिन्थियों 12:4)। ये साधारण या विशेष योग्यताएं या भूमिकाएं हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, कुछ मसीही जनों को भविष्यद्वाणी (प्रचार करने का) की साधारण या विशेष योग्यता(सेवाकाई),किसी को शिक्षा देने या प्रोत्साहित करने(रोमियों12:6-8) की सेवाकाई प्राप्त होती है जबकि कुछ लोगों को साधारण या विशेष कार्य करने अर्थात भविष्यद्वाणी(प्रचारक)शिक्षक व पासबान की जिम्मेदारी या भूमिका (कार्यालय)प्राप्त होती है(इफिसियों 4:11; रोमियों 12:4)। ये कार्यालय तुरन्त अगुवाई के पद प्रदान नहीं करते वरन वे उन विशेष क्षेत्रों में सेवा करने के लक्ष्य प्रदान करते हैं(1पतरस 4:10)।

(2) आत्मिक वरदान आत्मा के भिन्न प्रगटीकरण हैं।

विभिन्न प्रकार के विभिन्न वरदान विश्वासियों के भीतर पाये जाने वाले पवित्र आत्मा के कामों और उसकी उपस्थिति के विभिन्न प्रगटीकरण होते हैं(1कुरिन्थियों 12:7)।

(3) आत्मिक वरदान विभिन्न सेवाकाईयों में प्रदर्शित होते हैं।

"और सेवा भी कई प्रकार की हैं"(1कुरिन्थियों 12:5)। उदाहरण के तौर पर, आत्मिक वरदान लोगों में परमेश्वर के वचनों का प्रचार करने के दौरान प्रगट हो सकता है,खोई हुई आत्माओं को सुसामाचार सुनाने में प्रदर्शित हो सकता है और उद्धार पाये हुए लोगों को शिक्षा देने या उनकी चरवाई करने में प्रगट हो सकता है(इफिसियों 4:11-12)।

(4) आत्मिक वरदानो के प्रभाव अलग होते हैं।

"प्रभावशाली कार्य अलग होते हैं"(1कुरिन्थियों 12:6)। उदाहरण के लिए चंगाई के वरदान(बहुवचन)उन वरदानों की ओर इशारा करते हैं जो लोगों को शारीरिक, भावनात्मक और आत्मिक चंगाई प्रदान कर सकते हैं। इसके अलावा इन आत्मिक चंगाई का अर्थ सामान्य तरीकों की सहायता से चंगाई प्राप्त करना (जैसे किसी वैद्य की सहायता)या चमत्कारी ढंग से (विश्वास व प्रार्थना के द्वारा)चंगाई प्राप्त करना हो सकता है(1कुरिन्थियों 12:9)।

2. आत्मिक वरदानों की सीमाएं।

(1) आत्मिक वरदानो की अपनी एक सीमा होती है।

बहुत से आत्मिक वरदानों की सूची रोमियों 12:4-8;1 कुरिन्थियों 7:1,7; 12:7-10,28-30;14:6,26;इफिसियों 4:11; 1पतरस 4:10-11 में दी गयी है। इनमें से कोई एक सूची पूर्ण सूची होने का दावा नहीं करती है। इसके अलावा भी बहुत से ऐसे वरदान हैं जिनका जिक्र इन सूचियों में नहीं किया गया है। उदाहरण के तौर पर, पोशाके बनाने का विशेष गुण(निर्गमन 28:3;35:25,35), सब प्रकार हस्थकला की कारीगरी का कौशल(निर्गमन31:1-6); इमारतें बनाने का गुण(निर्गमन 35:10;36:1), संगीत तैयार करने का गुण(भजन 33:2-3), कविताएं व गीत लिखने का गुण (भजन 45:10) अगुवाई करने का गुण(भजन 78: 72)।

(2) आत्मिक वरदान देने वाले की ओर से सीमित हैं।

परमेश्वर अपने अनुग्रह के तहत अपनी इच्छा के अनुसार विभिन्न आत्मिक वरदान देता है। वह ही निर्णय लेता है कि किसको कौन सा आत्मिक वरदान दिया जाना चाहिए (1कुरिन्थियों 12:11)।

कोई भी जन सारे आत्मिक वरदानों को प्राप्त नहीं करता और न हीं सभी मसीहियों को एक समान वरदान दिये जाते हैं। उदाहरण के लिए, सभी मसीही अगुवे नहीं होते और न ही सारे मसीही अन्यान्य भाषा में बातें करते हैं(1कुरिन्थियों 12:29-30)।

जब हर मसीही जन के आत्मिक वरदान प्राप्त करने के सवाल पैदा होता है तो लोगों के जवाब अलग अलग हो सकते हैं।

- "हर एक" जन का अर्थ "हर एक जन जिसने इस संसार में जीवन व्यतीत किया है"(रोमियों 2:6)या "इस संसार में जीवन व्यतीत करने वाला हर एक मसीही जन " हो सकता है(प्रेरितों 2:38;रोमियों 12:3;14:12)। इसलिए कई मसीही विश्वासी विश्वास करते हैं कि 1 कुरिन्थियों 7:7,12:7,14:26 और 1पतरस4:10 का मतलब था कि हर एक मसीही जन ने आत्मिक वरदान प्राप्त किया है। यह सम्भव है।
- फिर भी,"हर एक जन" का अर्थ सीमित तौर पर किसी समूह या वर्ग से जुड़े लोगों से जुड़ा हो सकता है। उदाहरण के लिए, हर एक कपटी(लूका 13:15),एक बड़ी भीड़ में का हर एक सदस्य(यूहन्ना 6:7) या यहूदा का हर एक जरूरतमन्द मसीही(प्रेरितों 4:35)। इसलिए मसीही लोग विश्वास करते हैं कि 1 कुरिन्थियों 757,12:7, 14:26 व 1 पतरस 4:10 में पाये जाने वाले शब्द "हर एक" मतलब मसीह की देह के अंगों से है जिन्हें पवित्र आत्मा ने सर्वश्रेष्ठ तरीके से एक आत्मिक वरदान प्रदान किया है(1कुरिन्थियों 12:11,28-30)। इसलिए यह कहना उचित नहीं होगा कि पवित्र आत्मा ने इस संसार में रहने वाले हर एक मसीही जन को एक आत्मिक वरदान दिया है।

इफिसियों 4:7 में लिखा है,"पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है।" वहां पर यह नहीं लिखा है कि हर एक मसीही ने "एक आत्मिक वरदान "प्राप्त किया है,परन्तु हर एक मसीही को "अनुग्रह" मिला है। परमेश्वर का अनुग्रह उसके वरदानों से अधिक बढ़कर है। उदाहरण के तौर पर, कई मसीहियों को आत्मिक नींव डालने में महारथ हासिल है(1कुरिन्थियों 3:10), जबकि दूसरे मसीहियों को दूसरों की तुलना में अधिक कठिन कार्य करने की ताकत मिली हुई है(1कुरिन्थियों 15:10)। कई मसीहियों को कठिन परिस्थितियों के बावजूद बचत करने का वरदान मिला होता है(2 कुरिन्थियों 12:9), जबकि बहुत से मसीहियों को विदेशों में जाकर मिशन कार्य करने का वरदान मिला होता है(गलातियों 2:9)। इसी तरह से कुछ मसीहियों को परमेश्वर की ओर से विशेष योग्यताएं व भूमिकाएं मिली हुई हैं जिन्हें आत्मिक वरदान कहा जाता है (इफिसियों 4:11;1 पतरस 4:10-11)।

(3) आत्मिक वरदानों का प्रभाव क्षेत्र सीमित होता है।

केवल "अनुग्रह" ही नहीं वरन परमेश्वर के वरदान भी अपने प्रभाव क्षेत्र में सीमित होते हैं-उनकी सदा अपनी एक "परिमाप" होती है(इफिसियों 4:7)। इसका मतलब हैं कि मसीह द्वारा ठहरायी गयी परिमाप के अनुसार ही मसीहियों को आत्मिक वरदान दिये गये हैं। उदाहरण के तौर पर, किसी मसीह को बच्चों को सिखाने का वरदान मिला है और किसी को व्यस्क लोगों को। किसी विश्वासी को कहानियां सुनाने के द्वारा शिक्षा देने का वरदान मिला है परन्तु किसी को बाइबल की व्याख्या करते हुए शिक्षा प्रदान करने का वरदान। संसार में कोई सब कुछ नहीं सिखा सकता और न ही कोई शिक्षक इतना सिद्ध शिक्षक नहीं है(यीशु को छोड़कर)जो शिक्षा के हर तरीके का इस्तेमाल कर सके।

3. आत्मिक वरदानों को उद्देश्य।

आत्मिक वरदानों को ग्रहण करने के चार भिन्न उद्देश्य हैं।

- आत्मिक वरदान अपनी बढ़ौतरी या प्रशसां के लिए नहीं वरन दूसरे मसीहियों की सेवा करने के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए।(1 पतरस 4:10-11)
- आत्मिक वरदान का इस्तेमाल सार्वभौमिक कलीसिया का निर्माण करने के लिए किया जाना चाहिए न की किसी एक डिनोमिनेशन या मण्डली का निर्माण करने के लिए (1कुरिन्थियों 12:7;14:12)
- आत्मिक वरदानों का इस्तेमाल सार्वभौमिक कलीसिया में सेवा निभाने हेतू मसीहियों को तैयार करने के लिए किया जाना चाहिए(इफिसियों 4:12)।
- आत्मिक वरदानों को इस्तेमाल हर चीज़ में परमेश्वर को महिमा देने के लिए इस्तेमाल होना चाहिए। (1 पतरस 4:11)।

ज.पवित्र आत्मा से सम्बन्धित अन्य शिक्षाएं।

1. पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व व उसकी भूमिका। **देखें** मैनुएल 2, अध्याय 21।
2. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, भरा जाना और उसके फल। **देखें** मैनुएल 4, अध्याय 45
3. पवित्र आत्मा के आत्मिक वरदान। **देखें** मैनुएल 7,अध्याय 36।
4. अधिक आत्मिक वरदान। **देखें** मैनुएल 7, परिशिष्ट 12

	प्रार्थना (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में लगातार प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1.समर्पण : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2.किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के लोगों के साथ "पिन्तेकुस्त-पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने का स्मरणोत्सव" के आधार पर प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3.परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **2कुरिन्थियों 1-3** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4.याद करें। बाइबल की नयी आयत **(4) यूहन्ना 3:16** को याद व मनन करें। रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। (**यूहन्ना 3)**। बाइबल अध्ययन की पाँच चरणों की विधि का प्रयोग करें।

6.प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

7.मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।